# शुक्रवारचे भजन



पद -1

गणराजपायीं मन जड जड जड। एकदंत गजवदनविराजित। मोदक भिक्षसी भड भड भड।। ध्रु.।। वेदभुजांगी शेंदुर चर्चित। फरशांकुश करी खड खड खड।।१।। पीतांबर जिर विरे फणिवेष्टित। मूषक चालिव दड दड दड।।२।। माणिक म्हणे मितमंद मुक्यासी। वाचे बोलिव घड घड घड।।३।।

#### भजन

आदि अंती तूं गणराजा। विघ्नें वारुनि घेसी पूजा॥

#### पद

अरे गुरुराया माझी निरसली माया ॥ध्रु.॥

माझे फुंकिताचि कान। हरपले मी-तूंपण ॥1॥

चहूं देहांचा उभारा। वारुनी दावी निजथारा ॥2॥

माणिकासी कृपा केली। मज माजी मेळविली ॥3॥

#### भजन

जय गुरु जय जय गुरु। दत्ता परब्रह्म सद्गुरु ॥

# पद

पाहि पाहि मला श्री व्यंकटा ॥ध्रु.॥

मस्तिकं मुगुट कानी कुंडल झळके। पीतांबर शोभत की कटा ॥1॥

दीनदयाळ प्रभु भक्ताचें कारण। उभा असे पुष्करणी तटा ॥2॥

माणिक म्हणे तुज शरण आलिया। वारिसि दुर्धर संकटा ॥3॥

# भजन

व्यंकट व्यंकट व्यंकट व्यंकट। वारी माझे दुर्धर संकट॥

#### पद

ये रे माझ्या शेषाचलवासी दीनोद्धारणा रे॥ध्रु.॥

लक्ष्मीपति ये श्रीनिवासा स्वामी पुष्करणीतीरवासा। पडता संकट स्मरता त्वरितचि निवारणा रे ॥१॥

जे का तुझिये दर्शन घेती प्राणिमात्र त्वरित उद्धरिती। शरण आलिया करिसी भवभय निवारणा रे ॥२॥

गोविंदा गरुडध्वजस्वामी जपता पातक भस्मचि नामीं। म्हणुनि माणिकदास शरण तुज मधुमुरदैत्य संहारणा रे ॥३॥

#### भजन

लक्ष्मीरमणा गोविंदा। करुणा शब्दें कडुनि वदा॥

# पद

शेषाचलवासी देवा धांव त्वरेनें ॥ध्रु.॥ काय करूं मज कांही सुचेना। वृत्ति नसे एक्या ठायीं ॥1॥ षड्वैरी मज अतिशय गांजिती। जाच फार झाला जीवा ॥2॥ माणिक म्हणे प्रभु सोडवी येथुनि । द्यावा चरणाचा ठावा ॥3॥

# भजन

धांव धांव शेषाचलवासी। भक्तवत्सला किती अंत पाहसी॥

#### पद

व्यंकटराया संकट वारी तारी तारी दीना रे ॥ ध्रु. ॥ नयन भुकेले दर्शन घ्याया। धीर न धरवे मना रे ॥ 1 ॥ मी बुडतो भवसागरडोही। येऊं दे कांही करुणा रे ॥ 2 ॥ माणिक म्हणे प्रभु तुझिया वाचुनी। शरण मी जाऊं कवणा रे॥ 3 ॥

# भजन

पुष्करणीमधें स्नान करा। देव दर्शने भव हारा॥॥

# पद

देखो देखो री सखी छब बाला की ॥ध्रु.॥ शेषाचल पर आप विराजे। चौकी हनुमत लाला की ॥1॥ मोर-मुकुट मस्तक पर सोहे। बहुत लगी लड़ माला की ॥2॥ मानिक के मन सुमिरत बाला। फांस कटे भवजाला की ॥3॥॥

# भजन

कृपासिंधु श्री लछमन बाला। राखो लाज दीनन प्रतिपाला॥ ॥

# अष्टक

पातकी घातकी मी अमें कि अमा। मन हे भजनीं न वसे सहसा। नाहिं देव द्विजाप्रति प्जियला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला 1111 विषयांध आणि अति मंदमती। किंध नाहिंच केली तुझिये स्तुती। दुर्बुद्धि बहु सुजनी छळिला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला 11211 स्वधर्म तो सोडि अधर्म धरी। परदारधना अभिलाष करी। धरि संगत मी कुश्चळ कुटिला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला 11311 अन्यायी खरा परि दास तुझा। अपराध क्षमा करि कोण द्जा। धरि हातीं मला करि तू आपुला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला 11411 कनवाळु तुझेविण कोणि नसे। वदती अठरा आणि साहि तसे। अति पापी अजामिळ उद्धरिला। प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला 11511 अरि मित्र समान तुला श्रीहरी।

मजला ही प्रतीति आलीसे बरी।

पुतनाप्रति मोक्ष तुंवा दिधला।

प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला

पातकी शरणागत होय जरी।

गुण-दोष न जाणिस मुक्त करी।

म्हणुनि दिनवत्सल नाम तुला।

प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला ॥७॥

विनवीतसे माणिकदास तुला।

निर्दाळुनि पातक तारि मला।

हीन दीन परी पदरीं पडला।

प्रभुजी प्रभुजी प्रभु तारि मला

11811

11611

# भजन

राम राम राम राम। सीताराम सीताराम ॥उपासना मार्तंड

# श्क्रवारच्या आरत्या

# अष्टक

कोणी एका कालाठायीं नैमिषारण्याप्रति। ऋषी सर्व मिळुनि एकमेकांसि पृच्छिति। देव तीन त्यांत कोण मुख्य म्हणावा बरा। शेषाचल श्रीनिवास पाहु चला सत्वरा

11111

तयांतुनी भृगु मुनीनें देव दोन्ही पाहिले। अनादरें पाहृनि फिरे विष्णुद्वारिं चालिले। हरि उठ्नी धरितां चरण ताडि मुनीनें पद उरा। शेषाचल श्रीनिवास पाहु चला सत्वरा 11211 उरीं चिन्ह पाहुनि रमा काय बोले ते क्षणीं। "माझा जेथें वास तेथें ताडियलापद मुनी"। म्हणुनि उठुनि जाय रुसुनि क्षेत्र कोल्हापुरा। शेषाचल श्रीनिवास पाहु चला सत्वरा 11311 रमेवीण उदासीन होऊनि तिंत्रिणीस्थळी। दुग्धपान करुनि जाण राहे गुप्त वारुळीं। होते तेथें अकस्मात भेटे त्वरित श्रीवरा। शेषाचल श्रीनिवास पाहु चला सत्वरा 11411 वराह त्यासि स्थळ दासि देउनि पार्शी ठेविलें। मग नृपति बहुत प्रीति आत्मजासि अर्पिलें। भूदेविपाणिग्रहण केलें सह सुरवरा। शेषाचल श्रीनिवास पाहु चला सत्वरा 11511 श्वश्र बंध् भक्तवर्य देवालय बांधिलें। नऊ दिवस आनंदेंसि उत्साहा मांडिले।

परोपरी काढि वाहन स्थान मान बहुवरा। शेषाचल श्रीनिवास पाह चला सत्वरा 11611 सकल तीर्थ सकल देव वैभवेंसी तत्वतां। घेउनियां नांदतसे व्यंकटेश तो आतां। साम्यतेसि नाहीं काशी वैकुंठचि दूसरा। शेषाचल श्रीनिवास पाहु चला सत्वरा 11711 इह संपत्ति अंती मुक्ति देतो प्रीति निजकरीं। म्हण्नि भक्त भाविकासि प्रार्थितसे नरहरी। जा पहा गा ध्या हृदयी मूर्ति ती धरा। शेचाचल श्रीनिवास पाहुं चला सत्वरा 11811 शेजारती निद्रा करि श्रीवनमाळी नित्याहुनि निशि बहु झाली ॥ध्रु.॥ गजदंती मंचक मांडे। रजताचे साखळदांडे। छतासी रेशिमगोंडे। झालरी पडदे चहुंतोंडे हो 11111 मखमल मदरा जरतारी। मउ गादी उशा शेजारी। वरि लेप मोप बुटेदारी। उष्णास्तव शेला भारी हो 11211 सुगंध गंध चर्चाया। करि अत्तर अबिर लावाया। वाळे पंखे वाराया। हार तुरे गजरे सेवाया 11311

लखलखित तबकमाझारी। विडे तांबूल आणिक सुपारी। शीतोदक सुवर्णझारी। रत्नाच्या समया चारी ॥४॥

बकुली दासी पदसेवी। भोगाया श्रीभूदेवी। नरसिंह द्वारा कडि लावी। निद्रा सुखशयनी घ्यावी ॥5॥॥

# जयकार

॥ लक्ष्मीरमण गोविंदा गोविंदा॥

॥ अवधूत चिंतन श्रीगुदेव दत्त॥

।। सद्गुरु माणिकप्रभु महाराज की जय।।